## Q.1. जैनियों के स्यादवाद सिद्धांत की विवेचना करें।

**Ans.** जैन के मतानुसार प्रत्येक वस्तु के अनन्त गुण होते हैं। मनुष्य वस्तु के एक ही गुण का ज्ञान एक समय में पा सकता है। वस्तु के अनन्त गुणों का ज्ञान मुक्त व्यक्ति के द्वारा ही सम्भव है। साधारण मनुष्यों का ज्ञान अपूर्ण एवं आंशिक होता है। वस्तु के इस आंशिक ज्ञान को 'नय' कहा जाता है। 'नय' किसी वस्तु के समझने के विभिन्न दृष्टिकोण हैं। ये सत्य के आंशिक रूप कहे जाते हैं। इनसे सापेक्ष सत्य की प्राप्ति होती है, निरपेक्ष सत्य की नहीं। स्यादवाद ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धांत है।

इसी कारण जैन-दर्शन में प्रत्येक नय के आरम्भ में 'स्यात्' शब्द जोड़ देने का निर्देश किया गया है। उदाहरणस्वरूप यदि हम देखते हैं कि टेबुल लाल है तो हमें कहना चाहिए कि 'स्यात् टेबुल लाल है।' यदि कहा जाय कि टेबुल लाल है तो उससे अनेक प्रकार की भ्रान्तियाँ उपस्थित हो सकती हैं। इसे ही 'स्याद्वाद' कहा जाता है। अत: स्याद्वाद वह सिद्धांत है जो मानता है कि मनुष्य का ज्ञान एकांगी तथा आंशिक है।

इसी प्रकार जैन-दर्शन में परामर्श (Judgement) सात प्रकार के माने गये हैं। जैन-दर्शन में इन्हें ''सप्त-भंगी नय'' कहा जाता है। जो निम्नलिखित हैं–

**(1) स्यात् अस्ति (Some how S is) :** यह प्रथम परामर्श है। उदाहरणस्वरूप यदि कहा जाय कि ''स्यात् दीवाल लाल है'' तो इसका अर्थ यह होगा कि किसी विशेष देश, काल और प्रसंग में दीवाल लाल है। यह भावात्मक वाक्य है।

**(2) स्याति नास्ति (Some how S is not) :** यह अभावात्मक परामर्श है। टेबुल के संबंध में अभावात्मक परामर्श इस प्रकार का होना चाहिए–स्यात् टेबुल इस कोठरी के अन्दर नहीं है।

**(3) स्याति अस्ति च नास्ति च (Some how S is and also is not) :** वस्तु की सत्ता एक अन्य दृष्टिकोण से हो भी सकती है और नहीं भी हो सकती है। घड़े के उदाहरण में घड़ा लाल भी हो सकता है और नहीं भी हो सकता है। ऐसी परिस्थिति में 'स्यात है' और 'स्यात नहीं है' का ही प्रयोग हो सकता है।

**(4) स्यात अव्यक्तव्यम् (Some how S is indescribable) :** यदि किसी परामर्श में परस्पर विरोधी गुणों के संबंध में एक साथ विचार करना हो तो उनके विषय में स्यात् अव्यक्तव्यम का प्रयोग होता है। लाल टेबुल के सम्बन्ध में कभी ऐसा भी हो सकता है जब उसके बारे में निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि वह लाल है या काला। टेबुल के इस रंग की व्याख्या के लिए 'स्यात' अव्यक्तव्यम का प्रयोग वांछनीय है। यह चौथा परामर्श है।

**(5) स्यात् अस्ति च अव्यक्तव्यम् च (Some how S is and is indescribable) :** वस्तु एक ही समय में हो सकती है और फिर अव्यक्तव्यम रह सकती है। किसी विशेष दृष्टि से कलम को लाल कहा जा सकता है। परन्तु जब दृष्टि का स्पष्ट संकेत न हो तो कलम के रंग का वर्णन असम्भव हो जाता है। अत: कलम लाल और अव्यक्तव्यम है। यह परामर्श पहले और चौथे को जोड़ने से प्राप्त होता है।

**(6) स्यात् नास्ति च अव्यक्तव्यम् च (Some how S is not, and is Indescribable):** दूसरे और चौथे परामर्श को मिला देने से छठे परामर्श की प्राप्ति हो जाती है। किसी विशेष दृष्टिकोण से किसी भी वस्तु के विषय में ''नहीं है'' कह सकते हैं, परन्तु दृष्टि स्पष्ट न होने पर कुछ नहीं कहा जा सकता। अत: कलम लाल है और अव्यक्तव्यम् भी है।

**(7) स्यात् अस्ति च नास्ति च अव्यक्तव्यम् च (Some how S is, and is not and is indescribable) :** इसके अनुसार एक दृष्टि से कलम लाल है, दूसरी दृष्टि से कलम लाल नहीं है और जब दृष्टिकोण अस्पष्ट हो तो अव्यक्तव्यम् है। यह परामर्श तीसरे और चौथे को जोड़कर बनाया गया है।

**डॉ. श्रवण कुमार मोदी**
**सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग**
**शिवदेनी राम अयोध्या प्रसाद महाविद्यालय**
**बारा चकिया,पूर्वी चम्पारण**
**मो0–9608685335**
Email Id- shrawankumarmodi1973@gmail.com